"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 04, Issue: 02,Mar. – Apr. 2017 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) - 4.935

भारतीय नारी परंपरावादी एवं आधुनिक रूप
(तिसरे लोग के संदर्भ में)

डॉ.प्रमोद पाटील,
इंद्रराज महाविद्यालय, सिल्लोड,
ता. सिल्लोड, जि. औरंगाबाद

तिसरे लोग इस गीतांजली चटर्जी व्दारा लिखित तथा सामायिक प्रकाशन व्दारा प्रकाशित उपन्यास मे लेखिका गीतांजली ने समाज में फैले एक ऐसे विषय को छुना है कि, आधुनिक समाज चाहे दावे कर ले मगर उस संबंध की समाज ने ऐसी लक्ष्मण रेखा खींची है, कोई उसके आगे जाने से कतरता है वह है समलैंगिक संबंध । वह भी किसी महिला लेखिका व्दारा उसे लिखना यह तो बडा साहसपुर्ण काम गीतांजली चटर्जी ने किया है।

इस उनन्यास के फाल्गुनी जो जोगिया डॉ स्मारक किस्तना प्रमुख पात्र है फाल्गुनी जो परंपरावादी आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। जिसे अपना पति समलैंगिक कामवासना से पिडीत है यह पता चलने के बाद भी वह उसका तिरस्कार करने के बजाए साथ देती है पति को ही परमेश्वर मानना इस भारतीय नारी की सांस्कृतिक परंपरा तथा मुल्यो पर खरी उतरती है भले ही उसके मन में दुःख वेदना है मगर वह एक परंपरावादी आदर्श नारी के रूप में अपना पत्नी धर्म निभाती है ।

वही दुसरी और डॉ स्मारक का चरित्र लेखिका ने समलैंगिकता का प्यासा के रूप चित्रित किया है जिसके माध्यम से समलैंगिक की भावनाओं को समाज के सामने रखने प्रयास किया है वह समलैंगिकता का स्विकार होने के कारण शादी नही करना चाहता । मगर समाज और माता पिता के लिए वह फाल्गुनी से शादी करता है उसे स्त्री पुरूषों के नैसर्गिक संबंध से ज्यादा उसे समलैंगिक संबंध अच्छे लगते हैं इस कारण वह फाल्गुनी से लैंगिक संबंध नही रख पाता तो वह अपने आपको फाल्गुनी का अपराधी मानता है । जब वह फाल्गुनी से दुसरी शादी करने के लिए कहता है तो वह उसे इन्कार करती है यहॉ पर परंपरावादी भारतीय नारी आदर्श रूप सामने आता है।

जब वह एडस जैसी भयानक बीमारी पर रिसर्च करने के लिए जाना चाहता है तो वह उसे सहर्ष इजाजत देती है तथा अस्पताल बनाने के लिए पुरा सहयोग देकर अपना पत्नी धर्म निभाती है इसके विपरीत दुसरा पात्र जो जोगिया का है जो आधुनिक भारतीय नारी के रूप में उपन्यास में चित्रित है जो समाज के अन्याय अत्याचार चुपचाप न सहते हुए समाज को चुनोती देने के लिए तैयार है वह महिलाओं पर हो रहे अन्याय अत्याचार शोषण के खिलाफ आवाज उठाती है जो भारतीय नारी के बदलते स्वरूप को दर्शाया है।

तिसरा पात्र किसना का है, जो अपनी बडी महत्वाकांक्षायो के लिए समलैंगिकता की काहोरी में गिर गया हैं जहॉ उपर आने का रास्ता ही नहीं है वहॉ सिर्फ अंत है जो एडस जैसी भयानक बीमारी के कारण होता है पैसो के लिए समाज के कुछ लोग अपने शरीर को बेचकर किस प्रकार भयानक बीमारी के शिकार होते है इसका उदा किसना के रूप में हमें मिलता है । वही दुसरी और जोगिया का पति सिर्फ रोमांस के लिए समलैंगिक संबंध रखता है इसके साथ में धन दौलत सब कुछ है ऐसा भी वर्ग हमारे समाज में है यह बताने का प्रयास इस पात्र के माध्यम से हुआ है बडी सहजता से समय की भावना और विचारात्मक को प्रस्तुत करते हुऐ स्वतंत्रता के पश्चात शहरों और महनगरों का विकास हुआ जीविको पार्जन हेतु शिक्षित और बेरोजगार युवकों का आगमन शहरों में होने लगा महानगरों में आने के बाद अनेक समस्याएँ निर्माण होने लगी अनेक लोगों के भीड में रहकर वह स्वयं को अकेला समझने लगा। इन्ही समस्याओं को गीतांजली जी ने उपन्यासों का विषय बनाया है। गीतांजली चटर्जी की दृष्टी पुरी तरह से समाज के विभीन्न अंगो एवं उनकी समस्याओ पर केंद्रित है अनुभव की प्रामाणिक अनुभुती उपन्यास के माध्यम से की है। महानगरों के जीवन पर आधारित इन रचनाओं की इनकी समस्याओं का वास्तविक चित्रण किया है सामाजिक यथार्थ को वहन करना और निरंतर बदलते परिवेश से बदलते जीवन शैली उतारना उनकी विशेषतः रही है। लेखन के आरम्भ से सामान्य मनुष्य के दुःख दर्द को

"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 04, Issue: 02,Mar. – Apr. 2017 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) - 4.935

इच्छा आकांक्षाओ को उसके अभाव और संघर्ष को मजबुरी को पकडने का प्रयास किया है ।

उपन्यास में सरलता है तो जीवन की जटिलता उनकी आम आदमी के दुःख दर्द एवं उनकी मजबुरी पर टिकी हुई है। लेखिका ने उपन्यास साहित्य के माध्यम से सामान्य आदमी के संघर्ष घटती मानवीय संवेदनाऍ बढती कृत्रिमता अकेलापन भ्रष्टाचार आदि का चित्रण किया है परंपरा का खंडन करनेवाली आधुनिक नारी का भी चित्रण किया है उपन्यास की कला भुमी जीवन के यथार्थ को अपना वास्तविक रूप में चित्रित करती है। उनके उपन्यासों में निम्न मध्यमवर्गीय जीवन का बिखराव एवं टुटन है, अपना शौक बरकरार रखते हुए खुद ही भयानक बीमारी का शिकार होना नारी जीवन की असहाय एवं दयनीय स्थितियो का चित्रण है उनकी भाषा में एक प्रवाह है, जो लेखिका ने अपने साथ आसानी से लिए चलती है घटनात्मक सच्चाई की जगह मानवीय सच्चाई का चित्रण किया है, सचमुच गीतांजली चटर्जी ने एक सजग सफल और सार्थक लेखक के रूप में हमेशा याद किए जाते रहेगी।

लेखिका गीतांजली चटर्जी ने इस 'तिसरे लोग' उपन्यास के माध्यम से समाज मे बेमालूम पल यह समलैंगिकता इस गंभीर विषय को साथ लेकर भारतीय नारी के परंपरावादी आदर्श नारी तथा आधुनिक भारतीय नारी ऐसे दोनों रूपों को चित्रित करने का कार्य प्रस्तुत उपन्यास में किया है। ऐसे विषयों को अभी तक किसी पुरूष साहित्यकार ने भी नही उठाया, उसे गीतांजली चटर्जी जैसी महिला लेखिका ने उठाया यह एक उनका काबिले तारिफ कदम कहा जा सकता है।

संदर्भ –

1. पृष्ठ क्र.1
2. पृष्ठ क्र.5
3. पृष्ठ क्र.9
4. पृष्ठ क्र.12
5. पृष्ठ क्र.14

(तिसरे लोग– गीतांजली चटर्जी, सामायिक प्रकाशन)